ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष - 16 अंक - 10 अगस्त-II, 2015 पाक्षिक माउण्ट आबू ₹8.00

परमात्म प्रकाश से प्रकाशित दादी प्रकाशमणि

कहते हैं जहां प्रकृति सुंदर होती है वहां बरबस सैलानी आकर्षित हो जाते, उसे निहारते, उसको अपने आँखों रूपी कैमरे में पूरी तरह से कैद करते और पुन: जाकर उसका चित्र निकाल, उसकी तस्वीर को कमरे में सजा देते। फिर भी मन नहीं मानता और बार-बार उसे देखते। ऐसे ही प्रकृति की अनुपम छटा से सुशोभित, जिसे हूरों ने स्वयं सजाया हो, चाँद का नूर जिस पर बरसता हो, जिसे देखकर हवा भी उस ओर आने को आतुर होती और उस सुगंध को लेकर पूरे विश्व में फैलाने हेतु आग्रह करती, ऐसे परमात्म प्रकाश से प्रकाशित दादी प्रकाशमणि की ऐसी अविस्मरणीय छवि को कौन सी ऐसी दीद है जो दीदार न करना चाहेगी! ऐसी प्रज्ञा की मिसाल दादी माँ को हम सभी ब्रह्मावत्सों का सहृदय और सप्रेम सलाम। '

ऐसी मान्यता है कि जिस घड़ी रब किसी इंसान को गढ़ता है उस समय अपनी सारी खूबी उसके अंदर वो जैसा है वैसी ही डाल देता है, और फिर उसे कई बार निहारता है, फिर नीचे भेजता है ताकि जब भी कोई इंसान इसको देखे तो उसे उसके खुदा या रब की याद आ जाए। यह मान्यता सरासर गलत है कि मनुष्य गलतियों का पुतला है, बल्कि वो तो खूबियों का गुलदस्ता है। लेकिन खूबी देखने के नैन भी तो चाहिए! ऐसी खूबियों का गुलदस्ता हमारी दादी प्रकाशमणि थीं जिन्हें हम जिस रूप से भी देखें, हर तरफ से कुछ न कुछ गुण रूपी पुष्प हम उठा सकते हैं। उनका पूरा चरित्र एक जीवन दर्शन है, अर्थात् उनकी नज़र से जो कुछ भी कोई देखना चाहे, वो देख सकता है। कहते हैं कि दादी जी एक आईना थी हमारे लिए जिसमें सभी अपनी तस्वीर जाकर देखते और अपने अनुभव में कहते कि हमारी दादी के अंदर ये विशेषता है और हम इस विशेषता को लेकर अब आगे बढ़ेंगे।

ब्रह्माबाबा का अक्स थीं हमारी दादी

18 जनवरी 1969, जब ब्रह्माबाबा ने शरीर छोड़ा, उस समय अपना सारा यज्ञ-कारोबार व उसकी सम्पूर्ण कार्यशैली को दादी जी के हाथ में सौंपा। दादी जी का अनुभव है कि उसकी पूर्व तैयारी ब्रह्माबाबा बहुत पहले से कर रहे थे। दादी जी के गुण को देखकर बाबा ने उन्हें सब कुछ विल किया। मात-पिता की पालना में पले किसी बच्चे के ऊपर एकाएक कोई ज़िम्मेवारी आ जाए जो उसके माता-पिता निभाते हों तो कैसा अनुभव होगा! लेकिन कहा जाता है कि दादी प्रकाशमणि थोड़ी भी विचलित नहीं हुईं, उन्होंने इस कार्य को बखूबी निभाया। उन्होंने सभी ब्रह्मावत्सों को वही पालना दी जो ब्रह्माबाबा देते थे। तभी तो आज मधुबन में किसी से भी बात करो, सभी का एक ही स्वर होता है कि वो हमारी दादी माँ थीं।

एक प्रकाश पुँज है, एक प्रकाश की मणि।
दोनों मिलके आज भी दे रहे हैं रोशनी।

स्वयं से स्वयं को चेक करते थे दादी

एक बार दादी से सबने उनके पुरुषार्थ के बारे में पूछा कि दादी आप अपना पुरुषार्थ कैसे करते हैं ? दादी ने बताया कि मैं आत्मा हूँ, हीरे समान देखती हूँ और उसको अपनी हथेली पर रखती हूँ तथा चेक करती हूँ कि हीरे की किस साइड से प्रकाश ठीक से नहीं आ रहा है, अर्थात् कौन से गुण व शक्ति की कमी है, उस ओर मैं अपने आप को घिसती हूँ, सफाई करती हूँ, तराशती हूँ। इससे वहां का धूमिल प्रकाश हटकर तीव्र प्रकाश आना शुरु हो जाता है। मेरे से किसी को कष्ट व दु:ख तो नहीं हुआ ऐसा महसूस कर परिवर्तन करती हूँ । इस तरह का था दादी का पुरुषार्थ।

सभी को एक सूत्र में बांध, साथ मिलकर चलने वाली दादी एक सम्पूर्ण व्यक्तित्व थीं।

कहते हैं दादी जी की उल्हना, आदेश और अनुदेश में लोगों को मिठास का अनुभव होता रहा। शायद इन्हीं सारी बातों को लेकर प्रकाश पुँज शिव बाबा ने अपने रथ द्वारा यही प्रेरणा दी कि आप परमात्म कार्य की उन सभी ज़िम्मेवारियों को निभाओ जो बाबा उनके रथ द्वारा किया करते थे। ज्ञान में विशेष रुचि रखने वाली दादी जी ने इस विशेषता को समाज के सभी वर्गों के लिए अपनाया।

शिव बाबा की मंसा को साकार किया दादी ने

बाबा ने ज्ञान कलश माताओं के सिर पर रखा, उसी में दादी जी भी थीं जिन्होंने अपने प्रकाश से सभी के मन रूपी क्यारी को सींचा। दैदीप्यमान प्रकाश शिव बाबा ने अपने प्रकाश की किरण इस मणि को प्रदान किया और उस मणि ने अपने प्रकाश से अन्य मणियों को रोशनी दी, ऐसे दी कि आज वो मणियां पूरे विश्व में अपना प्रकाश फैला रही हैं। कहा जाता है कि संसार में कार्य तो सभी करते हैं लेकिन कुछ लोग सभी के लिए एक मिसाल छोड़ जाते हैं,वही मिसाल हैं दादी प्रकाशमणि।